International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बारेला जनजाति की सांस्कृतिक परम्पराओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन (खरगोन जिले के संदर्भ में)

शैलेन्द्र मालीवाड[1], डॉ.आरती व्यास[2]

[1]सहा.प्राध्यापक एवं शोधार्थी समाजशास्त्र, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शास.कला एवं वाणिज्य महा. इन्दौर
[2]सह–प्राध्यापक समाजशास्त्र, श्री अटल बिहारी वाजपेयी शास.कला एवं वाणिज्य महा. इन्दौर

शोध सारांश–भारतीय समाज आदिकाल से ही संस्कृति, सभ्यता एवं परम्पराओं से पहचाना जाता रहा है। भारतवर्ष की मुख्य पहचान ही संस्कृति है, जिसका गुणगान सम्पूर्ण ब्रहमाण्ड में होता है क्योंकि भारतीय संस्कृति के भिन्न–भिन्न रूप हमारे राष्ट्र में आज भी विद्यमान है, जिसमे खान–पान, व्यवहार, पहनावा, भाषा आदि अनेक भिन्नताएं देखने को मिलती हैं। पर्व और उत्सवों को हमारी संस्कृतिक परम्पराओं में अलग–अलग ढंग से बडे उत्साह के साथ मनाया जाता है, जिसका प्रभाव आज भी अन्य देशों तक दिखाई देता है। प्रस्तुत शोध मे बारेला जनजाति की सांस्कृतिक एवं परम्परागत रिति–रिवाजों मे आये परिवर्तनों का अध्ययन वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे किया गया है। अध्ययन मे पाया गया की यह समुदाय अन्य जनजातीय समुदायों से भिन्न है जिसमें समुदाय का रहन–सहन, जीवन शैली, भाषा, पहनावा, रिति–रिवाज, संस्कृति, परम्पराएं, प्रथाएं, एवं कूप्रथाएं सम्मिलित है जिनमें अन्य जनजातीय समुदायों से भिन्नता देखने मे आई। यह एक ऐसा समुदाय है जिसने अपनी संस्कृति और परम्पराओं को वर्तमान मे भी यथावत एवं सुरक्षित रखा है। कहीं–कहीं संस्कृति और परम्पराओं मे बदलाव देखने मे आया, जिसके कईं कारण सामने आये जिसमें नगरों से सम्पर्क, आधुनिक शिक्षा, तकनीकि, आधुनिक पहनावा आदि प्रमुख कारण है जिनके कारण संस्कृति, परम्पराओं, पारम्परिक जीवन शैली, भाषा और पहनावा मिश्रित होता जा रहा है।

शब्द कुंजी–बारेला समुदाय, संस्कृति, सभ्यता, परम्परागत पर्व, उत्सव, संगीत कला, नृत्य कला, राणी दिवाळी, भंगरयो, नवाय, कूल्यो, डायला, भाणिज्या, भुंज्या, पटल्या, पूजारा जुवानाय, हिंदला।

प्रस्तावना– सम्पूर्ण भारतवर्ष में अनेक प्रकार की संस्कृति एवं परम्परा के लोग निवास करते हैं। यद्यपि भारत गाँवों में बसता है और गाँवों में ही विभिन्न प्रकार की परम्परावादी संस्कृति के लोग निवास करते हैं तथा ग्रामीण क्षेत्रों मे ज्यादातर जनसंख्या जनजातियों की है। जनजातियों में विभिन्न प्रकार की संस्कृतियाँ, परम्पराएँ एवं लोक रीतियाँ विद्यमान थीं और आज भी बरकरार है। कुछ जनजातियों की संस्कृति एवं परम्पराएँ आश्चर्यजनक एवं विचित्र हैं जिनमें गोंड, भील, बारेला, पटलिया, तडवी, भगोरिया, हो जनजाति आदि प्रमुख है। भारत देश विविधता में एकता का प्रतिक है यहाँ अनेक धार्मिक विविधता एवं अनेक धार्मिक, सांस्कृतिक परम्पराएँ हैं। साथ ही अनेक प्रकार की जातियाँ एवं जनजातियाँ हैं। भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में जनजातियों की सांस्कृतिक परम्पराएँ भी भिन्न–भिन्न हैं। भारत के पर्वतीय एवं वन्य क्षेत्रों में अनेक ऐसे मानव समूह निवास करते हैं, जो कि मानव सभ्यता के विकास की दृष्टि से प्रारम्भिक सौपानों से आगे नहीं बढ़ पाये हैं, इन्हें आदिवासी, कबोली, असभ्य, जंगली आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है। आदिवासी और जनजाति शब्द की समाजशास्त्रीय एवं मानवशास्त्रीय व्याख्या अनेक विद्वानों ने की है। भारतीय संविधान में आने के बाद ही अनुसूचित जनजाति शब्द प्रचलन में है, जो भारतीय संविधान में स्वीकृत भी है।

महाद्वीपों के दुर्गम क्षेत्रों में आज भी ऐसे अनेक मानव समूह हैं, जो हजारों वर्षों से शेष विश्व की सभ्यता से दूर अपनी सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना की पहचान बनाये हुये है। यह मानव समूह बीहड़, वनों, मरूस्थल,

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

पहाडियों, ऊँचे पर्वतों और अनुर्वर पठारों के उन अंचलों में निवास करते हैं जिन्हें आधुनिक समाज की अर्थदृष्टि अनुपादक मानती है। हिन्दी में ऐसे मानव समूह के लिए ''जनजाति'' ''आदिवासी'' ''कबिला आबादी'' ''वनवासी'' जैसे सम्बोधन हैं। ऐसा ही एक जनजातीय समुदाय है **बारेला** । बारेला जनजाति भील जनजाति की ही एक उपजाति है, जो मध्यप्रदेश में विशेषतया पश्चिम निमाड़ और महाराष्ट्र में फैली हुई है, यह अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। वस्तुतः उपजातियों के सन्दर्भ में एक–दूसरे से रोटी–बेटी व्यवहार नहीं है। इनमें अपने गोत्र के प्रति गहरी आस्था एवं विश्वास है।

श्री चन्द जैन ने बारेला जनजाति के बारे में बताते हुए कहा है कि–''भीलों से अधिक तथा भिलालों से अपेक्षाकृत कम प्रगतिषील ये आदिवासी निमाड़ में अधिक रहते हैं। होल्कर राज्य की जनगणना से प्रकट है कि ये खरगोन, सेगाँव, भिकनगाँव तथा भगवानपुरा परगनों में काफी बड़ी संख्या में है। ये जनजाति बाहुल्य क्षेत्र है। साथ ही यहाँ बारेला जनजाति की संख्या 81.6 प्रतिशत है।

बारेला जनजाति की विषेषताएँ–

1. अपनी जनजाति को अन्य जनजातियों से ऊपर मानना।
2. बारेला जनजाति के लोग हर तीज–त्यौहार, एवं उत्सवों को धूमधाम और नाच–गानों के साथ मनाते हैं।
3. बारेला जनजाति बहिर्विवाह की कठठ्र विरोधी है। क्योंकि आज भी अन्तर्विवाह का प्रचलन है।
4. बारेला जनजाति में लड़की को लड़के द्वारा स्वैच्छा से भगा के ले जाने की प्रथा का प्रचलन है। पहले अपहरण करके ले जाने की प्रथा हुआ करती थी।
5. यह जनजाति प्रकृति पूजक जनजाति है।
6. इनमें अपने गोत्र के प्रति गहरी आस्था एवं विश्वास है।

अध्ययन के उददेष्य –

1. बारेला जनजाति की पारिवारिक एवं सामाजिक परम्पराओं का अध्ययन करना।
2. बारेला जनजाति की वर्तमान में प्रचलित सांस्कृतिक गतिविधियाँ एवं उनमें आये परिवर्तनों का अध्ययन करना।
3. बारेला जनजाति की प्रथाओं का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
4. बारेला जनजाति से सम्बंधित अनछुएँ पहलुओं पर प्रकाश डालना।

शोध विधि –शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधियों का चयन किया गया।

शोध पद्धति–प्राथमिक स्त्रोत : साक्षात्कार अनुसूची, सामूहिक चर्चा, अवलोकन से प्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।

द्वितीयक स्त्रोत : सरकारी दस्तावेज, पुस्तकें, वार्षिक रिपोर्ट, बारेला समुदाय पत्रिका, आदि से अप्रत्यक्ष अध्ययन किया गया।

अध्ययन का क्षेत्र–अध्ययन हेतु बरेला जनजाति बाहुल्य क्षेत्र खरगोन जिला चुना गया जिसकी भगवानपुरा, झिरनिया, भीकनगांव, गोगावां, बडवाह और सेगांव समेत छः तहसीलों का अध्ययन किया गया।

निदर्शन विधि–अध्ययनकर्ता द्वारा दैव निदर्शन विधि की सीमित दैव निदर्शन (नियमित अंकन) पद्धति से 6 तहसीलों से 50–50 उत्तरदाताओं सहित कुल 300 उत्तरदाताओं का चयन किया गया।

अध्ययन की इकाई–बारेला समुदाय के परिवारों को अध्ययन की इकाई के रुप मे चुना गया।

तथ्यों का विष्लेषण– बारेला समुदाय की सांस्कृतिक और परम्परागत गतिविधियों के अध्ययन का विश्लेषण किया गया जिसमें यह पाया गया की शिक्षा के कारण बारेला समुदाय की पारम्परिक गतिविधियों में काफी हद तक बदलाव आये है। 63 प्रतिशत बारेला समुदाय के परिवारों का कहना है कि उनके बच्चे जब से शहरों की और पलायन करने लगे तभी से परिवार में पहनावा, भाषा एवं त्यौहारों को मनाने के ढंग मे बदलाव आये है। वहीं 37 प्रतिशत बारेला समुदाय के परिवार ऐसे भी है जिन्होने परिवार की पारम्परिक गतिविधियों को यथावत रखने मे कठोरता बरती है। वहीं आधुनिक शिक्षा एवं तकनीकि से बारेला समुदाय की संस्कृति मे परिवर्तन कम ही देखने मे आये है, 53 प्रतिशत बारेला समुदाय के परिवार आज भी पूर्वजों की सभ्यतानुसार ही पारिवारिक गतिविधियों को संचालित करते है लेकिन 43 प्रतिशत बारेला समुदाय के परिवारों ने अपनी संस्कृति मे बदलाव नगरीकरण एवं आधुनिकता की चपेट मे आने के कारण किये है लेकिन इसका तात्पर्य यह नही की वे मूल संस्कृति से भिन्न हो गये अंतर सिर्फ इतना है कि इनकी परम्परागत संस्कृति मिश्रित हो गई है। वहीं बारेला समुदाय के 78 प्रतिशत परिवार अपने आप को अन्य स्थानीय जाति एवं जनजातियों से भिन्न समझते है इसके कारण जानने पर ज्ञात हुआ की इनका पहनावा, आभुषण रिति–रिवाज, भाषा, पारम्परिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों मे भिन्नता है। आज भी बारेला समुदाय के 52 प्रतिशत परिवार सामान्य बीमारी के उपचार हेतु बडवे (तांत्रिक) के पास झाड–फुंक (जादू–टोना, टोटका) करवाने में विश्वास रखते है। बारेला समुदाय के गांवों मे जाति पंचायत व्यवस्था देखी गई, यह व्यवस्था बारेला समुदाय की न्याय प्रणाली को प्रदर्शित करती है। 95 प्रतिशत बारेला परिवारों का कहना है कि गांव की पारिवारिक एवं सामुदायिक समस्या का समाधान जाति पंचायत के माध्यम से ही होता है। जिसका प्रधान गांव का पटेल होता है।

बारेला जनजाति की संस्कृति–बारेला समुदाय की संस्कृति समुदाय के पहनावे, पर्व, उत्सव, नृत्य और संगीत मे झलकती है। बारेला समुदाय की संस्कृति ही इसकी मुख्य पहचान है। इस समुदाय में नृत्य उत्सवों के अनुसार भिन्न– भिन्न प्रकार से किये जाते हैं, जैसे विवाह उत्सव में आदिवासी लोक नृत्य, होली उत्सव मे बड़े ढोल, मान्दल के साथ होली दहन के आसपास रातभर समूह नृत्य किया जाता है एवं दिपावली उत्सव पर गायन के साथ ताली बजाते हुए गोल घेरे में समूह नृत्य, नवाई गीतों के साथ महिला पुरूष का समूह नृत्य एवं होली के पहले सामूहिक भगोरिया नृत्य बहुत प्रचलित है।

जनजातीय संगीत और वादन का इतिहास बहुत प्राचीन है और अन्य समाज एवं संस्कृति से भिन्न और विचित्र भी। संगीत कला में लोक गायन अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग प्रकार से गाया जाता है, कहीं युगल तो कहीं एकल गायन प्रचलन में है। गायन भी उत्सवों के अनुसार भिन्न– भिन्न प्रकार के है जैसे नवाई उत्सव में नवाई गीत गोल घेरे मे सामूहिक नृत्य के साथ गाये जाते हैं।

नवाय पूजन चित्र

''वाड़ा मे वेरी ती कूल्प्यो नी वारू रे, डायला तारी जायरे वर्षात वारू रे,

डायला वेरी ते कुल्प्यो नी, कुल्प्यो ते नेंद्यू नी, डायला तारी जायरे वर्षात वारू रे।

इने धड़े गंगा ने पले धड़े जमुना, जमुना पार कर दे रे ईला भाणीज्या,

गावड़ी छुड़ी ने पले सयरे लगाड़ो रंगे लाकड़ी रे लोल'' ।।

उपरोक्त पंक्तियों में गीत के माध्यम से बुजूर्ग व्यक्ति को यह कहा जा रहा है कि बुवाई तो कर दी है पर खेत मे खरपतवार मारने के लिए कुल्पा (खरपतवार नाशक यंत्र) नहीं खेड़ा है और ना ही खरपतवार की निंदाई की गई है, बरसात भी जा रही है। अगली पंक्तियों मे इस पार गंगा है और उस पार यमुना है यमुना पार करवाने के लिए भान्जे से निवेदन किया जा रहा है और रंगीन लकड़ी लेकर गाय को चरने हेतु रास्ते लगाने की बात कही जा रही है।

इसी तरह दिपावली गीत जनजातीय संस्कृति मेंसाहित्यीक पहचान बनाये हुए है। दिपावली पर ग्रामीण संस्कृति की बहार देखने लायक होती है। मवेसियों को इस तरह सजाया जाता है मानों जैसे मवेसियों का विवाह हो रहा हो। तत्पश्चात मवेसियों को नरसिंह देव के आस पास थाली बजाकर दौडाया जाता है। इस पर्व पर तरह–तरह के व्यंजन बनाये जाते है और दिपावली गीत गाये जाते हैं।

दिपावली पूजन चित्र, हिंदला पूजन चित्र

'' सरगे से उत्तरी रानी दिवाली वो तु, लक्ष्मी माता ने पॉय लागे रानी दिवाली वो तु।
पापड़या, भूज्या बनाई खवाड़ो रानी दिवाली वो तु,पटल्या पुजारा रे लक्ष्मी नो खानो पुजी दे रानी दिवाली वो तु'' ।।

अर्थात स्वर्ग से दिवाली आई है लक्ष्मी माता के पैर छुए जा रहे हैं एवं पापड़, भजिये खिलाये जा रहे हैं और गाँव के पटेल द्वारा भोग लगाकर पूजा की जाने की बात उक्त गीत मे की गई है।

दिपावली के पश्चात फाल्गुन माह में होली पर्व का प्रारम्भ होता है, जिसमें भगोरिया पर्व आदिवासियों के द्वारा हर्षोउल्लास से मनाया जाता है। इस मेले मे बड़ी–बड़ी मान्दल, ढोल, नगाड़ों के अलावा फेफरिया, ढांक आदि वादन के साथ गायन करते हुए सामूहिक नृत्य किया जाता है। यह उत्साह जहाँ पर साप्ताहिक हाट (बाजार) लगता है वहाँ उसी निर्धारित दिन में मेले का आयोजन होता है इस मेले में युवक–युवतीयां अपना जीवन साथी चुनने के लिए स्वतंत्र रहते हैं पसन्द और सहमति से मेले से भगा कर ले जाने की परम्परा इस मेले की मुख्य विशेषता है। वर्तमान में इस परम्परा का प्रचलन समाप्त होता जा रहा है। वर्तमान में पसन्द ना पसन्द, सहमति–असहमति का कोंई ओचित्य नहीं रहा जबरदस्ती भी कन्या को अगवा कर ले जाने की परम्परा प्रारम्भ हो गई है। पर कन्या के घर वालों को कन्या अगवा करने के पश्चात् सूचित कर दिया जाता है। तत्पश्चात दोनों पक्षों की सहमति होने पर युवक–युवती का विवाह करा दिया जाता है और असहमति होने पर कन्या को घर वापस लाया जाता है।

भंगर्‌यो देखणे आया म्हारा जुवान्या, चाल जुवान्या पानबिड़ो खवाड़ी दे,

पान बिड़ो खवाड़ी दे हिन्दला म बोसाड़ी दे।

भंगर्‌यो देखणे आया म्हारी जुवानाय, भर भंगर्‌या मा पान खाणे रड़े वो,

मा ढगाई म्हारी जुवानाय पानबिड़ो खवाड़ो वो, हिन्दला मा बसाड़ो वो।

उपरोक्त गीत मे युवती (प्रेमिका) युवक (प्रेमी) से पान खाने की चाहत रखते हुए हिन्दला (झुला) झुलने के लिए रोने की नाटक कर रही है वही जवाब मे युवक उसे समझाते हुए बोल रहा है कि नाराज (ढगाई) मतमैं पान भी खिला दूंगा और झुला भी झुला दूंगा।

भगोरिया उत्सव के बाद होली पर्व की धुमधाम देखने लायक होती है। ढोल, नगाड़ो के साथ होली दहन से प्रारम्भ होकर रातभर सामूहिक नृत्य किया जाता है सुबह घर–घर नास्ता और महुआ की देशी शराब पिलाई जाती है और होली के गीत दूसरे दिन से चार–पाँच दिन तक गैर गायन, गाँव मे घुमकर नाच–गाने के साथ गम्मत करते हुए रंग और गुलाल के साथ उत्साह से मनाया जाता है।

बारेमूयना नी होली आवी पापड्या, वड़ा ना हारे पुवो ता रानी,

होली तारी भोंगर्या मा जुवानी, केवड्यो उड़े रंग तारो होली मा जुवानी,

वाच्या न घुच्या लावी वो रानी, सेवी वो रानी होली वो तु।

उपरोक्त गीत के माध्यम से यह कहा जा रहा है कि बारह मास में होली आई है, जिसमें पापड़, उड़द के बड़े के साथ धागा डालकर शक्कर के हार बनाये गये है टेशू के फूल घोलकर रंग उड़ाया जा रहा है और सेवईयां (घुच्या) बना के होली माता की पूजा–अर्चना की जा रही है।

भारतीय समाज में सांस्कृतिक परम्पराओं का इतिहास बहुत प्राचीन है। इन उत्सवों के अलावा दिवासा, जीरोती और मवेशी उत्सव के गीत, नृत्य के साथ उत्साह से गाये जाते हैं। आदिवासी संस्कृति में परम्परागत लोक गायन में लावणी गायन और नवरात्र में गरबी गायन मृदंग के साथ होता है। साथ ही जन्मोत्सव गीत एवं मृतक गायन के साथ रात्रि भजन (जन्म से मरण तक) मृदंग, सेंतार, पिपरी और बंसी की थाप पर गाये जाते हैं।

जनजातीय समाज में ही प्रकृति से जुड़ाव और आस्था दिखाई देती है। किंतु जो ग्रामीण क्षेत्र शहरों की आधुनिकता की चपेट में आये हैं उन क्षेत्रों पर धर्म और जाति का गहरा प्रभाव पड़ा है। जिसके कारण इनकी मूल संस्कृति मे बहुत बदलाव आये हैं। जनजातीयों को हिन्दु धर्म मे सम्मिलित कर लेने के पश्चात् से इनमें हिन्दु धर्म के समस्त संस्कार और परम्परागत पूजा–पाठ, पर्व और उत्सव मनाने के ढंग में भी परिवर्तन होने लगे। मूर्ती पूजा में विश्वासऔर आस्था रखने लगे और प्रकृति से दूर होने लगे। कुछ ग्रामीण क्षेत्र विशेषकर पर्वतीय क्षेत्रों के नजदीक रहने वाली जनजातीयों मे प्राचीन संस्कृति आज भी जीवित प्रतित होती है इनमें गोण्ड, हो, और पश्चिम निमाड़ (खरगोन) पूर्वी निमाड़ (खण्डवा) बड़वानी, झाबुआ, अलीराजपुर के परगनों में रहने वाले भील (बारेला,पटलीया,तड़वी और भाबरिया भील) में मुख्य रूप से संस्कृति की प्राचीनता और प्राकृतिक विश्वास और आस्था से जुड़े हुए हैं। जैसे इनमें नवाई पर्व पर फसलों की पूजा की जाति है, जब वर्षा सत्र की समाप्ति और नई फसल का आगमन होता है। इनमें नवाई पूजन के बाद ही नई फसल खाना प्रारम्भ किया जाता है। तत्पश्चात् दिपावली पर फसल के लिए खेत में कृषि कार्य करने वाले पशु (बैल) की पूजा सजावट के साथ की जाती है और बेलों के पैर छुए जाते हैं। बैलों को भी बाजरा और चवले की दाल घटी मे पिसकर तेल मिलाकर खिलाया जाता है और महुए की शराब पिलाई जाती है। होली पर्व पर उसी फसल से उड़द के बड़े और सेवंईयां बनाई जाती है, जिससे पुरखों की पूजा के साथ–साथ होली की पूजा रंग और गुलाल से की जाती है और भोग लगाया जाता है। दिवासा पर्व पर धरती पूजन में अग्नी देव और जल देवी की पूजा के साथ खेत के रखवाले खेतरपाल देव की पूजा की जाती है। जनजातियों में टोटमवाद के तहत यह मान्यता है कि फसलों की रक्षा खेतरपाल बाबा के द्वारा की जाती है जिसकी पूजा–अर्चना फसल की बुवाई के पहले मुर्गे की बली देकर की जाती है एवं मन्त्रों उच्चारण के साथ धरती माता की पूजा की जाती है तत्पश्चात् खेतों को जूताईकी जाती है। इसके अलावा प्रत्येक पर्व परकुल देवता की पूजा की जाती है जो गोत्र के अनुसार अलग–अलग होते है। जनजातियों मे अपने गोत्र में विवाह संस्कार पर प्रतिबंध के साथ–साथ बहिर्विवाह पर भी प्रतिबंध है।

भारतीय समाज के इतिहास में सांस्कृतिक स्वरूपों का सम्पूर्ण वर्णन विद्यमान है, इसके अंतर्गत लोक संस्कृति में लोक जीवन की पंरपराएं आस्थाएं, विश्वास, रूढियां, लोक गाथाएं, लोकोत्सव, लोक भाषाएं और मिथक

आदि सम्मिलित है। संस्कृति भारतीय लोक जीवन का अभिन्न अंग है किसी भी काल के संस्कृति से उस समय के स्वरूप, जन समुदाय का खान–पान, व्यवहार, पहनावा, लोक संस्कृति, परम्पराएं, प्रथाएँ, कूप्रथाएँ आदि गतिविधियों का पता चलता है। जिस तरह संस्कृति समाज से प्रभावित होती है, उसी तरह समाज को प्रभावित भी करती है।

निष्कर्ष–भारतीय संस्कृति में कहीं प्राचीनकाल से वर्तमान तक निरंतर परिवर्तन हुए हैं तो कहीं संस्कृति अपने मूल स्वरूप में आज भी विद्यमान है। जनजातीय संस्कृति में विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों के लोगों में आज भी प्रकृति से लगाव देखा जा सकता है। वहीं नगरीकरण और औद्योगीकरण के कारण आधुनिकता की ओर अग्रसर होकर अपनी संस्कृति की मूल प्रवृतियों, गतिविधियों मे परिवर्तन हो गये हैं। संस्कृति को प्रभावित करने में कहीं धर्म की परम्परागत आस्था, तो कहीं राजनैतिक और आर्थिक कारण जिम्मेदार है, जिसके कारण भारतीय समाज की संस्कृति अपने मूल स्वरूप से दूर होती हुई प्रतीत हो रही है फिर भी साहित्य समाज को संस्कारित करने के साथ–साथ जीवन मूल्यों की भी शिक्षा देता है एवं कालखण्ड की विसंगतियों, विरोधाभासों को रेखाकिंत कर समाज की विद्यटनकारी प्रवृतियों को दर्शाते हुए संस्कृति में सकारात्मकता के संदेश प्रेषित करती हैं। जिससे समाज में सुधार आता है और सामाजिक विकास को गति मिलती है।

सुझाव–1. भारत की जनजातीय संस्कृति के संरक्षण हेतु शासन द्वारा सांस्कृतिक योजनाएं बनाना चाहिये जिससे उनकी मूल संस्कृति का संरक्षण हो सके।

2. अध्ययनकर्ताओं द्वारा संस्कृति का प्रसार किया जाना चाहिये।

3. बारेला समुदाय की संगठित गतिविधियों के संचालन से मूल संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है।

4. बारेला समुदाय के अध्ययनकर्ताओं द्वारा संस्कृति को संरक्षित रखने हेतु निरंतर शोध एवं प्रकाशन करते रहना चाहिये।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. संस्कृति अंक–11 भारत सरकार, पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय, नई दिल्ली, मार्च 2006, पृ–80।

2. सम्मेलन पत्रिका लोक संस्कृति अंक, सम्पादकीय, पृष्ठ–7, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 1973,।

3.https://hi.wikipedia.org/wiki

4. https://drishtiias.com

5. तवर डॉ. गुलनाज : बारेला जनजातीय जीवन और संस्कृति ,आ.लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी भोपाल म.प्र.